'भेलियाँ रहिये क्यूँ कर'

(श्रीमती अनीता खुराना जयपुर)

यूँ मिल बैठियाँ देख कर, हक हंसे हम पर
देखे खेल में जाकर यूँ गोलियाँ रहे क्यों कर

बैठी थीं परम धाम में अंग से अंग जोड़ दाडिग की कलियों की तरह, करती थीं हुशियारियाँ कि धनी क्या इतना ही फरेब का जोर होगा जो हमारे इश्क को मरोर कर रख देगा। आपने जब पूर्व में ही आगाह कर दिया है कि ऐसा होगा वैसा होगा मुझे भूल जाओगी, परम धाम को भूल जाओगी सखियों को भूल जाओगी, इश्क की बात तो दूर झगड़े करोगी तो फिर भी हम उसमें रम जाएगी क्या–नहीं धनी ऐसा नहीं होने देंगी। फिर आपस में कहने लगीं–

आपन सामी हासी करें हक सों, चले न खेल को बल
आपन आगूं चेतन हुइयाँ, रहिये एक दूजो हिलमिल
कहें रूहें एक दूजी पे, नजीक बैठो आए
जिन कोई जुदो परे, रहिये अंग लपटाए
रूहें एक दूजी की कहें, जिन अंग करी कोय
इन विध रहो लपटाय के, सब एक वजूद ज्यों होय
अंग जुदे न हो सके, तो क्यों होय जुदे दिल
एक जरे जुदा न हो सके, अंग यों रहे हिलमिल

इसी तरह की कई चौपाइयाँ हैं जहाँ खेल में आने से पहले हमने कई वादे, कौल, इकरार किए थे लेकिन अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि यदि एक वजूद वाली भावना हो तो फिर तो यदि किसी एक अंग को कोई पीड़ा होती है तो सारे शरीर की पीड़ा का अनुभव होना चाहिए लेकिन यहां तो विपरीत ही हो रहा है कि स्वयं ही हम एक दूसरे को पीड़ा पहुँचाने में लगे हुए हैं। शहर जुदे, समाज जुदे, भगवान जुदे एक ही शहर, एक ही समाज और एक ही मजहब के लोग आपस में एक दूसरे को यातना देने को तत्पर रहते हैं। एक वाणी को जानने वाले, एक दीन को मानने वाले, एक झण्डे के तले आकर भी हम एक दूसरे को समझाने में कमजोर प्रतीत होते हैं– सच ही कहा था धनी ने और तब हम बड़े आश्चर्य से जवाब दारी कर रहीं थीं कि फरेब का क्या इतना जोर होगा।

इश्क का बल मान के, क्या फरेब होसी जोर
निस्बत अपनी हक सो, क्यों देसी ऐ मरोर

धनी क्या मजाल कि हम आप को भूल जाएँ। फिर धनी ने समझाया था कि जुदे २ घर जुदे २ खसम करके तुम सपने को ही सच मान कर बैठ जाओगी और मेरे लाख बुलाने पर समझाने बुझाने पर भी बार २ यही कहोगी कि कौन जाने कहां से आए हैं, कहाँ जाना है। वास्तव में हमारी स्थिति आज बिल्कुल ऐसी हुई पड़ी है। इतनी धनी की मेहर इतना सूर्य रूपी ज्ञान का सवेरा, पहचान परम धाम के जरे २ का वर्णन, राजश्री श्यामा जी से सिनगार का वर्णन, हमारी अष्ट पहर की लीला, हमारा धाम

Nijanand App

वाला इश्क, हमारी साहबी सबका धनी ने वर्णन खुले दिल से कर दिया है और फिर भी हमारी गफलत जाती ही नहीं कि खेल में कुछ सूझता ही नहीं। कुछ ईमान में दृढ़ता आने भी लगती है तो बल देने वाले तो कम मिलते है और गिराने वाले अधिक। वहाँ पर किए वादे निभाने की बात तो दूर अभी तक तो पहचान ही नहीं हो पा रही कि हम वहीं के हैं और एक दूसरे को जैसे वहाँ पर कहा था, यहीं से भी वैसी ही तैयारी करें धनी के चरणों में चलने की।

मन में यह दृढ़ता आ जाए कि क्योंकि हम उस घर के हैं इसलिए इन्द्रावती ने हमारा हाथ पकड़ा है और धाम साथ ले जाने का वचन दिया है। लेकिन ऐसी कोई घेन धारण निद्रा ने घेरा है कि बार २ याद दिलाने पर भी, सुनकर पासा पलट कर सोने की कोशिश या नाटक करते हैं। नींद में कोई सोया हो तो जगाया भी जाता है, कोशिश भी की जाती है लेकिन यदि कोई मचला बनकर अर्थात वाणी का सार, अपनी सुध, धाम की सुध, धनी की पहचान हो जाने के बाद भी कहे कि क्या करें तो अफसोस धनी को ही होता है–

जब लग भूली नींद में, तब लग नहीं दोष
जब जागी हक इलम से, भूली सिर अफसोस

साथ जी ! यह मचलापन या जान के अन-जान बनने वाली नीति अब हमें त्याग कर डट कर जैसे धाम में वादे किए थे, वही इज्जत (दावा) लेकर धनी के चरणों में जाने की तैयारी करें ताकि कुछ तो शर्मिन्दगी कम हो अन्यथा हांसी तो धनी ने करनी ही है–कम या अधिक।

जैसा कि श्री जी ने फुरमाया है कि एक लुगा झूठ नहीं हो सकता तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि हमारी कही हुई बातें तो झूठ हो सकता हैं लेकिन धनी की बातें सब सही हो रही हैं। वाणी की यह चौ० भी सही हो रही है–

यूँ मिल बैठियां—

आज वाकई धनी हम पर हंस भी रहे हैं और दुखी भी हो रहे हैं कि माया को हुक्म तो दे दिया है लेकिन निकालना इतना मुश्किल हो गया है कि बार २ गफलत का पर्दा पड़ जाता है। कहती थीं कि एक वजूदकी तरह रहना लेकिन यहाँ तो अलग २ वजूद समझ कर सिर्फ प्रेम प्यार से बोल सुन लें वह भी मुश्किल हो रहा है। कह दिया जाता है कि हम भी अपनी तरीके से धनी को रिझा लेते हैं पर क्या धनी फिर एक २ को लेकर परधाम जायेंगे ? नहीं, क्योंकि कण्डीशन है कि जब तक सब साथ नहीं हो जाती परम धाम में जा नहीं सकते। परम धाम में तो रूहों की एक दिली ही 'वाहेदत' है तो वाहेदत में पहुँचने के लिए एक दिली प्यार महोब्बत की आवश्यकता है। जैसा कि श्री जी ने भी कहा है–

ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत तो मोहि को होत है सुख

अतः धनी को सुख देने के लिए साथ में प्रीत करना आवश्यक है। लेकिन यहाँ तो गा भी लेते हैं, पढ़ भी लेते हैं और सुन भी लेते हैं–

तारतम सब समझहि, धाम सैंया हम बहन
तिन भी बोध छूट्या नहीं, ए भी लगे दुख देन

जब विरोध छोड़ने की बात होती है तो उसे और अधिक जोर देकर किया जाता है–हम भी किसी से कम नहीं। धनी तो अक्षरातीत ने पहले ही कह दिया कि देखें खेल में कैसे हिल मिल कर रहती हैं, ऐसा फरामोशी का पर्दा डाला कि जो टाले नहीं टलता।

Nijanand App

आजकल के सामाजिक व धार्मिक वातावरण को देखते हुए तो बार २ यही बात मन में उपजती है कि चलो जिनकी तो सुध नहीं, वे तो मगन हैं अपनी माया में–कमाने, खाने और मरने-जीने में। लेकिन झगड़े तो समझने वालों की खुदी और गुमान के हो रहे हैं–

इलम चातुरी खूबी अंग को ही बन कर रह गई है जबकि होना यह चाहिए कि 'जो कहीं तुझे खुले वचन' तो आपस में बैठ कर एक दूसरे से सहूर कर धनी धाम की प्रेम से सुख पहुँचाए। वाणी और स्वामी जी के वचनों को सिर पर लेकर उस पर चलने की कोशिश तो कम है केवल बन्दगी और आराधना से औरों की भान्ति धनी को जुदा समझ कर भगवान और भक्त वाली पद्धति अपना ली है जो कभी साथ रहते ही नहीं जबकि धनी एक पल भी रूहों से जुदा नहीं हो सकते–

मैं रह न सकूँ रूहों बिन, रूहें न सकें मुझ बिन

एक सूर की किरणें या एक सागर की लहरें समझ कर हमें आपस में प्रेम पैदा करना है नहीं तो धनी की बात तो शतशत सही हो है, देखें खेल में भेलियाँ रहे क्यों कर।

कव्वाली

प्रोफैसर–प्रकाश जी, देहली

इश्क में हम तुम्हें क्या बतायें, किस कदर चोट खाए हुए हैं।
इश्क तेरा बड़ा है न मेरा बेवरा, यह ही करने आए हुए हैं।

इश्क रवद हुआ अर्श पे अपना,
तब धनी ने दिखाया यह सपना–तब धनी…
सुध अपनी न है घर की, ऐसे तिलस्सम में आए हुए हैं।

मेरे महबूब ने आ के पूछा,
इश्क लाओ कहाँ है अरश का–इश्क लाओ…
इश्क होता तो कुछ मुंह से कहते, अपनी नजरें झुकाए हुए हैं।

इश्क ईमान के पर हैं रूहों के,
बिना इश्क के उड़ नहीं सकते–बिना इश्क…
इश्क लौटा दो फिर वह अपना, आरजू यही लाए हुए हैं।

मेरे धनी जी मेहरबान हैं ऐसे,
सिफ्त झूठी जबान से हो कैसे–सिफ्त झूठी…
अपनी रूहों को लेने की खातिर, दूल्हा बन के वह आए हुए हैं।

Nijanand App